ओम् शान्ति 14-05-12 ओ.आर.सी., दिल्ली

प्राण अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश

– दादी गुल्ज़ार

आज आप सभी ओ.आर.सी. वाले बहनें और भाईयों की याद-प्यार लेते हुई वतन में पहुँची तो सदा के सदृष्य बापदादा सामने से मधुर मुस्कुराते स्नेह मई दृष्टि देते हुए मिले और मैं ऐसे अमूल्य दृष्टि लेते हुए सम्मुख पहुँच गई। बापदादा मुस्कुराते हुए बोले आओ मेरी स्वराज्य सो विश्व राज दुलारी बच्ची आओ। ऐसे कहते अपनी अमूल्य बाहों के माला में समा दिया। कुछ समय तो मैं आत्मा परमात्म लव में लीन थी उसके बाद बाबा बोले आज क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज तो आपके लाडले ओ.आर.सी. की बहनें और भाईयों की याद लाई हूँ। सब बहुत दिल से, याद में रहते, बहुत उमंग उत्साह से सेवा में लगे हुए है। सभी के दिल में यही संकल्प है कि बाबा की सौगात को बहुत-बहुत सर्विस में आगे बढ़ाना ही है। सब उमंग से भिन्न-भिन्न सेवायें कर रहे है और पुरुषार्थ में भी अटेन्शन रख परिवर्तन कर रहे है। बापदादा बहुत मुस्कुराये और बोले बहुत अच्छा है अगर ऐसे हिम्मत और दृढ़ता अपने में रखेंगे तो बापदादा इन हिम्मत रखने वालों को एक्स्ट्रा शक्ति सकाश देते रहेंगे। सकाश लेने के लिए सिर्फ सदा अपने मन-बुद्धि को क्लियर और क्लीन रखना आवश्यक है। बापदादा बड़ों और छोटों दोनों को याद-प्यार देते सदा कहते हैं बड़े तो बड़े हैं लेकिन छोटे दृढ़ता में बड़े पक्के है। ऐसे बच्चों को विशेष इन-एडवांस पदम गुणा प्यार दे रहे हैं कि ये ओ.आर.सी. वाले कुछ विशेष कमाल दिखायेंगे, कोमल नहीं कमल बन दिखायेंगे। बोलो बच्चे ऐसे जलवा दिखायेंगे ना! मीठे बच्चे दढ़ता और सहनशीलता की विशेषता की शक्तियों की छत्रछाया और बाप द्वारा प्राप्त वरदान सदा साथ रखना। सदा मन में पक्का याद रखना कि मैं बाप के लव में लीन योगिन हूँ, योगी हूँ। बाप की छत्रछाया हमारे ऊपर सदा है ही, ऐसे निश्चय बुद्धि स्थिति, निश्चिन्त विजयी आत्मा रहना ही है।

आज बापदादा के नयन सब बच्चों के इतने स्नेह में थे जो बाबा के नयनों में दो मोती चमक रहे थे और बापदादा के सामने सारा परिवार इमर्ज था। कुछ समय बाद बाबा बोले बच्ची इन बच्चों को आज वतन में बुलाकर सैर कराते है, बस बाबा का कहना और सब इमर्ज हो गये और अर्ध चन्द्रमा के रूप में सब एक-दो के पीछे सेट हो गये। बाबा बोले बाबा तो आते रहते लेकिन आज आप बच्चों को वतन में बुलाया हैं। तो चलो अब सैर कराये, ऐसे कहते बाबा आगे निमित्त बनी हुई बहनों आशा बहन, गीता बहन, शुक्ला बहन, विजय बहन, बृजमोहन भाई आदि के साथ-साथ चले। यह दृश्य बहुत अच्छा लग रहा था। सूक्ष्म वतन फरिश्तों से सज गया। बाद में बाबा हमें नदी किनारे ले चलें, नदी तो ऐसे लाइट से चमक रही थी जैसे चांदी की नदी लहरा रही है। किनारे में भिन्न-भिन्न प्रकार की हीरे चमक रहे थे। बाबा बोले जिसको जो हीरा पसन्द हो वो लेते चलो। जैसे सबने उठाया तो उस हीरे के अन्दर हर शक्ति की लिखत थी। कोई में सहनशक्ति की, कोई में समाने की शक्ति, सब बड़े प्यार से उठाते खुश हो रहे थे। सामने देखा तो आठ हीरों के ताज बने हुए थे, वह बाबा ने उठाये और मुख्य बहनों को पहनायें, जो बहुत चमक रहे थे। बाबा बोले मीठी बच्चियाँ अब ऐसे फरिश्ते अर्थात् सर्वशक्तियों के ताजधारी बनना है। यही दृढ़ संकल्प करो कि हमें बापदादा के हृदय का जो हार है उसमें पिरोना ही है। जो हृदय का हार बनता है उसकी किसी भी प्रकार से हार हो ही नहीं सकती। फिर सब बहनें भाई बाबा के आगे स्नेह में आगे बढ़े और बोले मीठे बाबा हम आपको कमाल करके ही दिखायेंगे। बाबा भी बहुत स्नेह से बोले निश्चय बुद्धि अमर रहो, उड़ते रहो। फिर तो बाबा ने सबको बहुत पावरफुल दृष्टि दी और सबको साकार वतन में भेज दिया। ओम् शान्ति।